7.1.4

हिन्दी मिलाप

'राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आलोक में भारत केंद्रित शिक्षा' पर हुई चर्चा

शिक्षा नीति पर व्याख्यान देते प्रेम नारायण सिंह। अवसर पर उपस्थित केंद्रीय हिन्दी संस्थान के अधिकारी एवं सहाध्यायी।

अन्य भाषाओं के ग्रंथों का संस्कृत में अनुवाद जरूरी

माई सिटी रिपोर्टर

वाराणसी। सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. गोपबंधु मिश्र ने कहा कि संस्कृत शास्त्रों के विकास के लिए दूसरी भाषाओं के महत्वपूर्ण ग्रंथों का अनुवाद कर लोकजन के लिए सहज बनाया जाए।

अनुवाद भाषा का होगा भावों का नहीं। इसके सतत विकास के लिए नए शब्दों के सृजन की भी जरूरत है। वह शुक्रवार को संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, आईकेएस सेंटर, संस्कृत भारती एवं भारती भाषा समिति की कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे।

प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी ने कहा कि संस्कृत तभी जनभाषा बन सकती है जब उसके मानक सरल होंगे। मुख्य वक्ता जेएनयू के प्रो. गिरीश नाथ झा ने कहा कि संस्कृतज्ञों का परस्पर समन्वय ही राष्ट्र उन्नति में सहायक हो सकता

कार्यशाला में मौजूद अतिथि।

है। प्रो. हरिशंकर पांडेय ने कहा कि संस्कृत एक वर्ग विशेष की भाषा नहीं विश्वस्तरीय भाषा है।

जेएनयू के प्रो. संतोष कुमार शुक्ल ने कहा कि भारतीय भाषाओं का उत्तर से दक्षिण तक का संस्कृत से अटूट रिश्ता है। प्रो. रामपूजन पांडेय ने कहा कि संस्कृत ही इस राष्ट्र की नींव है। प्रो. रमेश प्रसाद ने कहा कि संस्कृत आत्म शुद्धि और चिंतन की भाषा है। पाली और प्राकृत भाषा ही संस्कृत के दो हाथ हैं। संचालन डॉ. रविशंकर पांडेय ने किया।

मैथिली में देशभक्ति गीत रचना

- आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित देषभक्ति गीत रचना प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के छात्र श्री दीपक वत्स ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। दीपक वत्स द्वारा मैथिली भाषा में देशभक्ति गीत की रचना की गयी जिसकों लोक गायिका मैथिली ठाकुर द्वारा राष्ट्रीय मंचों पर प्रस्तुत किया गया साथ ही मन की बात के 98 एपीसोड में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा सराहा

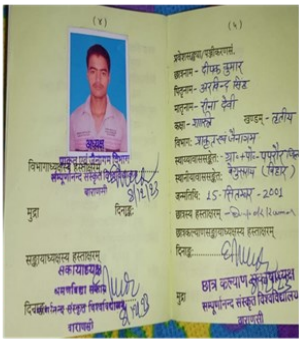

शास्त्री प्रथम वर्ष का छात्र दीपक वत्स श्री अर्जुन राम मेघवाल, संस्कृति एवं संसदीय कार्य राज्यमंत्री, भारत सरकार एवं श्रीमती मीनाक्षी लेखी, संस्कृति एवं विदेश राज्य मंत्री, भारत सरकार से सम्मान प्राप्त करते हुए

98th Episode of Mann Ki Baat

AUDIO CLIP

काशी
सांसद सांस्कृतिक
स्थान – महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,
• गायन • वादन • नृत्य • नुक्कड़ न
आयोजक - जिला प्रशासन, वाराणसी
SBI
UTKARSH

GPS Map Camera
Varanasi, Uttar Pradesh, India
8XHW+CW2, Jagatganj, Chaukaghat, Varanasi, Uttar Pradesh 221002, India
Lat 25.328438°
Long 82.99725°
22/11/23 02:13 PM GMT +05:30
Google

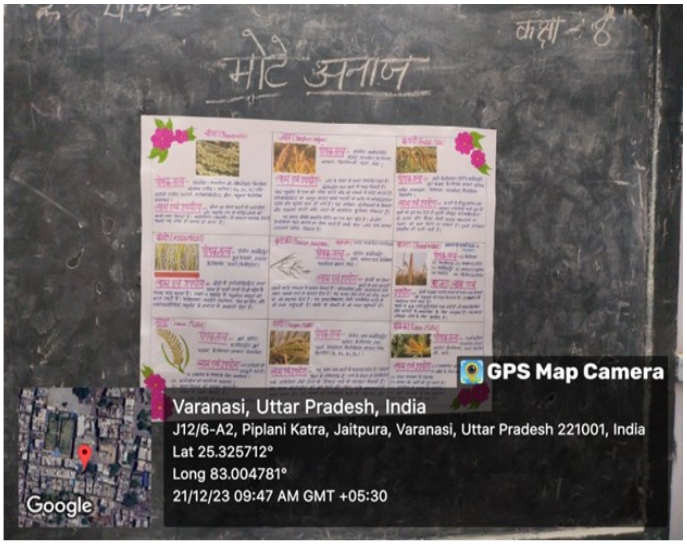
मोटे अनाज
GPS Map Camera
Varanasi, Uttar Pradesh, India
J12/6-A2, Piplani Katra, Jaitpura, Varanasi, Uttar Pradesh 221001, India
Lat 25.325712°
Long 83.004781°
21/12/23 09:47 AM GMT +05:30
Google

SUNITA MAM
GPS Map Camera
Varanasi, Uttar Pradesh, India
J12/6-A2, Piplani Katra, Jaitpura, Varanasi, Uttar Pradesh 221001, India
Lat 25.325727°
Long 83.004768°
21/12/23 09:49 AM GMT +05:30
Google

सरस्वती इण्टर कालेज, सूड़िया, बुलानाला, वाराणसी में शिक्षाशास्त्र, सं0सं0वि0वि0, के छात्रों द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम जिसमें कृष्ण सुदामा मिलन, शिव ताण्डव नृत्य, राम लक्ष्मण परशुराम संवाद, डमरू द्वारा शिव आरती इत्यादि कार्यक्रम आयोजित किये गये।

Shot on vivo Z1x
Vivo AI camera
2021.08.22 11:23

Shot on OnePlus

उद्घाटन समारोह

4 4वाँ अधिवेशन
15-17 दिसम्बर 2023

स्वतंत्र चेतना

संस्कृत भाषा के विकास के लिए संस्कृत में व्यवहार अनिवार्य-प्रो.रमेश प्रसाद

स्वतंत्र चेतना

वाराणसी। संस्कृत में बात करने से संस्कृत भाषा का अभ्यास सरल और शीघ्र हो जाता है। जो भाषा दैनिक व्यवहार में आती है वह बढ़ती है और उसका विकास होता है। संस्कृत भाषा के विकास के लिए संस्कृत में व्यवहार अनिवार्य है। लिखे हुए को पढ़ने की अपेक्षा बोली हुई भाषा का श्रवण करने से उसका सरलता से बोध होता है। ध्वनि अभिनय, मुख के भाव और परिसर वातावरण आदि इसके कारण है। अतः संस्कृत संभाषण से संस्कृत सरल है जनमानस में इस भावना का निर्माण होगा। संभाषण में चैतन्य होता है अतः अन्य व्यक्ति भी बोलने को उत्साहित होता है।

इस प्रकार संस्कृत भाषा व्यक्ति तक पहुँचती है। जाति, मत, प्रदेशादि भेद भाव के बिना ही सब लोगों को इसका ज्ञान होता है।

उक्त विचार बतौर मुख्य अतिथि सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में शिक्षाशास्त्र विभाग के तत्वावधान दस दिवसीय कार्यशाला संस्कृत सम्भाषण का समापन समारोह में श्रमण विद्या संकायाध्यक्ष प्रो रमेश प्रसाद ने व्यक्त किया।

प्रो रमेश प्रसाद ने कहा कि संस्कृत भाषा संस्कृति की वाहिका है। इस कारण से यदि वह दैनिक व्यवहार में आती है तो संस्कृति के जीवनदर्शन भी व्यवहार में आयेंगे। सम्भाषण कार्यशाला की संयोजिका एवं शिक्षा शास्त्र विभाग प्राध्यापिका डॉ विशाखा शुक्ला ने सभी आगन्तुकों एवं प्रशिक्षकों एवं प्रशिक्षार्थियों का स्वागत अभिनंदन करते कहा कि संस्कृत संभाषण से लोगों के हृदय में स्वाभिमान का निर्माण होता है। समाज के उपेक्षित वर्ग, जो लोग बहुत समय से संस्कृत शिक्षण से वंचित रहे उनमें संस्कृत शिक्षण से बहुत परिवर्तन होता है। समग्र देश के नगर व गाँव में संस्कृत संभाषण शिविर चलाने से ऐसा अनुभव हुआ है। इस प्रकार सामाजिक समरसता लाने में सामाजिक परिवर्तन करने में संस्कृत संभाषण की एक महत्वपूर्ण भूमिका होगी। डॉ विशाखा ने शिक्षाशास्त्री प्रथम एवं द्वितीय के छात्र, छात्राओं को इस अवसर पर कार्यशाला में प्राप्त अनुभव को साझा किया।

संस्कृत सम्भाषण के प्रशिक्षक डॉ रविशंकर पाण्डेय ने दस दिवसीय कार्यशाला के रूपरेखा का सम्पूर्ण विवरण प्रस्तुत करते हुये कहा कि संस्कृत सम्भाषण के माध्यम से संस्कृत के सरलीकरण का प्रभाव व स्वतःआत्मिक लगाव बढ़ता है। इसी तरह से लोगों का जुड़ाव होता रहा तो एक दिन संस्कृत पुनःआमजन की भाषा सिद्ध होगी। मुख्य अतिथि प्रो.रमेश प्रसाद के द्वारा प्रशिक्षियों को प्रमाणपत्र प्रदान किया गया।

पाली साहित्य में बुद्ध के उपदेशों का संग्रह

बोले प्रो. प्रद्युम्न दुबे

संविवि में आचार्य जगन्नाथ उपाध्याय स्मृति व्याख्यानमाला

जनसंदेश न्यूज

व्याख्यान माला में उपस्थित वीसी व अतिथि

वाराणसी। बीएचयू के पालि और दर्शन विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. प्रद्युम्न दुबे ने कहा कि पालि साहित्य में मुख्यतः बौद्ध धर्म के प्रवर्तक भगवान बुद्ध के उपदेशों का संग्रह है, किन्तु यह कहना कठिन है कि इसका कोई भाग बुद्ध के जीवनकाल में व्यवस्थित या लिखित रूप धारण कर चुका था। गुरुवार को वे सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय योगसाधना केन्द्र में आचार्य जगन्नाथ उपाध्याय स्मृति व्याख्यानमाला को संबोधित कर रहे थे।

बौद्ध मत में नारी और पाली भाषा एवं साहित्यः चुनौतियां तथा समाधान विषय आयोजित व्याख्यान माला में कहा कि पालि प्राचीन उत्तर भारत के लोगों की भाषा थी। जो पूर्व में बिहार से पश्चिम में हरियाणा-राजस्थान तक और उत्तर में नेपाल-उत्तरप्रदेश से दक्षिण में मध्यप्रदेश तक बोली जाती थी। भगवान बुद्ध भी इन्हीं प्रदेशों में विहरण करते हुए लोगों को धर्म समझाते रहे।

अध्यक्षता करते हुये कुलपति प्रो. हरेराम त्रिपाठी ने कहा कि आचार्य जगन्नाथ जी का सम्पूर्ण पारिवारिक पृष्ठभूमि संस्कृतमय रहा है। गांधीजी के विचारधारा से युक्त होकर सदैव दलितों के प्रति उदार भाव से उन्हे ऊपर उठाने का प्रयास करते रहे। उन्होंने सदैव भारतीय संस्कृति को बढ़ाने तथा लोगों की संकीर्ण मानसिकता को दूर करने का सतत प्रयास किया।

विशिष्ट वक्ता प्रो. हरप्रसाद दिक्षित, प्रो. रमेश प्रसाद, प्रो. रामकिशोर त्रिपाठी, प्रो. रामपूजन पाण्डेय, प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी, प्रो. सुधाकर मिश्र, प्रो. शैलेश कुमार मिश्र, प्रो. प्रेमचंद जैनी, प्रो. हीरककान्ति चक्रवर्ती, डॉ. कुंज बिहारी द्विवेदी उपस्थित रहे। स्वागत प्रो. हरिशंकर पाण्डेय और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. रविशंकर पाण्डेय ने किया।

विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ सम्पूणानंद जी की 133 वें जयंती महोत्सव

सूर्य की भांति काशी ही नही साथ-साथ सम्पूर्ण भारत देश को प्रकाशित किया--- कुलपति प्रो बिहारी लाल शर्मा

राष्ट्र के विकास में मुख्य आधार स्तम्भ होते हैं श्रमिक : कुलपति